IGNOU "MOTHER PUBLICATION" All PDF BUY ON WHATSAPP MSG- 9485943709
Page 1 of 38 Pages in this Full pdf
THIS IS COPYRIGHT PDF DO NOT SELL OR SHARE TO ANYONE- OTHERWISE LEGAL ACTION TAKEN

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

एमपीएसई-002

(हिन्दी माध्यम)

FROM PREVIOUS YEAR PAPER's

IMPORTANT QUESTION ANSWER's

Guess Paper / Exam Notes

By India's No.1 - Mother Publication

FOR MORE PDF 9485943709

Disclaimer for Guess / Sample Paper By MOTHER NOTES- 8529719732, 99922-90905: -

This PDF contains sample papers compiled from previous years' questions of the IGNOU It is intended to provide you with a general idea of the paper format and may cover some potential questions. However, it is important to note the following:

1. **No Guarantee of Exam Questions:** We do not guarantee that the questions presented in this sample paper will appear in your actual exams. The content is for practice purposes only.
2. **Book Study Recommended:** To achieve good marks in your IGNOU exams, it is highly recommended that you thoroughly study the prescribed course materials and textbooks. Relying solely on this sample paper may not be sufficient for exam success.
3. **Use as a Study Aid:** Use this sample paper as a supplementary study aid to test your knowledge and exam preparedness.
4. **Self-Responsibility:** Your performance in exams is your responsibility, and success depends on your dedication to studying the course material.

We wish you the best of luck with your IGNOU exams. Thank you for using this sample paper as part of your preparation. **By MOTHER NOTES- 8529719732, 99922-90905**

All Full PDF- https://mothernotes.in/ - Previous year solved paper , Guess Paper.

IGNOU "MOTHER PUBLICATION" All PDF BUY ON WHATSAPP MSG- 9485943709
Page 2 of 38 Pages in this Full pdf
THIS IS COPYRIGHT PDF DO NOT SELL OR SHARE TO ANYONE- OTHERWISE LEGAL ACTION TAKEN

खंड-I

10 अंकों के प्रश्न - प्रत्येक 400-500 शब्द

प्रश्न - उन विचारों और परिस्थितियों का वर्णन करें जिनके कारण लैटिन अमेरिका में स्वतंत्रता आंदोलन शुरू हुआ।

उत्तर- **लैटिन अमेरिका में स्वतंत्रता आंदोलनों को जन्म देने वाले विचार और परिस्थितियाँ**

18 वीं सदी के अंत और 19 वीं सदी के आरंभ में लैटिन अमेरिका में स्वतंत्रता आंदोलनों को बौद्धिक प्रभावों, सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों और राजनीतिक विकास के संयोजन ने आकार दिया। इन कारकों ने सामूहिक रूप से औपनिवेशिक समाजों को यूरोपीय प्रभुत्व को चुनौती देने और अंततः स्वशासन की तलाश करने के लिए प्रेरित किया।

ज्ञानोदय के विचारों का प्रभाव

लैटिन अमेरिकी स्वतंत्रता को आकार देने में ज्ञानोदय ने एक आधारभूत भूमिका निभाई। जॉन लॉक, मोंटेस्क्यू और रूसो जैसे दार्शनिकों ने प्राकृतिक अधिकार, लोकप्रिय संप्रभुता और शक्तियों के पृथक्करण जैसी अवधारणाओं को बढ़ावा दिया। ये विचार शिक्षित क्रियोल अभिजात वर्ग में फैल गए, जिन्होंने यूरोपीय राजतंत्रों और औपनिवेशिक शासन की वैधता पर सवाल उठाना शुरू कर दिया। यह विश्वास कि लोगों को अन्यायपूर्ण सरकारों को उखाड़ फेंकने का अधिकार है, ने उपनिवेशों को राजनीतिक स्वतंत्रता और गणतांत्रिक व्यवस्था की कल्पना करने के लिए प्रोत्साहित किया।

अन्य क्रांतियों का प्रभाव

दो प्रमुख क्रांतियाँ—अमेरिकी क्रांति (1776) और फ्रांसीसी क्रांति (1789)—इसके सशक्त उदाहरण हैं। अमेरिकी संघर्ष ने यह दर्शाया कि औपनिवेशिक मुक्ति संभव है, जबकि फ्रांसीसी क्रांति ने स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के आदर्शों को बढ़ावा दिया। गुलाम बनाए गए अफ्रीकियों के नेतृत्व में हैती क्रांति (1791-1804) की सफलता ने यह और भी सिद्ध कर दिया कि उत्पीड़ित आबादी साम्राज्यवादी सत्ता को चुनौती दे सकती है। इन वैश्विक आंदोलनों ने लैटिन अमेरिकियों को अपने स्वयं के विद्रोह संगठित करने के लिए प्रेरित किया।

सामाजिक असमानताएँ और क्रियोल असंतोष

FOR MORE PDF 9485943709
All Full PDF- https://mothernotes.in/ - Previous year solved paper , Guess Paper.

IGNOU "MOTHER PUBLICATION" All PDF BUY ON WHATSAPP MSG- 9485943709
Page 3 of 38 Pages in this Full pdf
THIS IS COPYRIGHT PDF DO NOT SELL OR SHARE TO ANYONE- OTHERWISE LEGAL ACTION TAKEN

लैटिन अमेरिकी समाज अत्यधिक स्तरीकृत थे, जहाँ प्रायद्वीपीय (स्पेन में जन्मे स्पेनिश) उच्च प्रशासनिक और राजनीतिक पदों पर थे, जबकि क्रियोल (अमेरिका में जन्मे स्पेनिश) के पास धन तो था, लेकिन शक्ति सीमित थी। इससे क्रियोल लोगों में असंतोष पैदा हुआ, जो अधिक राजनीतिक प्रभाव की आकांक्षा रखते थे। इसके अतिरिक्त, मूल निवासियों, गुलाम बनाए गए अफ्रीकियों और मिश्रित नस्ल के समूहों को औपनिवेशिक आर्थिक व्यवस्थाओं, जैसे कि एनकोमिएन्डा और बागान दासता, के तहत शोषण का सामना करना पड़ा। व्यापक सामाजिक अन्याय ने विदेशी शासन के विरोध को और भड़का दिया।

आर्थिक प्रतिबंध और औपनिवेशिक शोषण

यूरोपीय व्यापारिक नीतियों ने उपनिवेशों को केवल अपने मातृ देशों के साथ ही व्यापार करने के लिए मजबूर किया, जिससे आर्थिक विकास बाधित हुआ। स्पेन और पुर्तगाल ने करों, एकाधिकार और जबरन श्रम के माध्यम से धन कमाया। जैसे-जैसे वैश्विक व्यापार का विस्तार हुआ, क्रियोल व्यापारियों और ज़मींदारों ने आर्थिक स्वतंत्रता की मांग की। आर्थिक हताशा स्वतंत्रता आंदोलनों के पीछे एक प्रमुख प्रेरक शक्ति बन गई।

यूरोपीय शक्तियों का कमजोर होना

नेपोलियन के स्पेन और पुर्तगाल पर आक्रमण (1807-1808) ने औपनिवेशिक सत्ता को अस्थिर कर दिया। यूरोपीय राजतंत्रों के कमज़ोर होने के साथ, क्रियोल नेताओं को स्वायत्तता स्थापित करने का अवसर मिला। यूरोप में राजनीतिक संकट ने सिमोन बोलिवर, जोस डी सैन मार्टिन और मिगुएल हिडाल्गो जैसे क्रांतिकारी नेताओं को समर्थन जुटाने और सफल अभियान शुरू करने का अवसर दिया।

निष्कर्ष

इस प्रकार, ज्ञानोदय के विचार, क्रांतिकारी प्रेरणा, सामाजिक और आर्थिक असमानताओं तथा कमजोर यूरोपीय नियंत्रण के संयोजन ने लैटिन अमेरिका में स्वतंत्रता आंदोलनों के उदय के लिए आदर्श परिस्थितियां पैदा कीं।

प्रश्न - गुयाना और त्रिनिदाद में अनुबंधित श्रम प्रणाली पर चर्चा करें ।

उत्तर- **गुयाना** और **त्रिनिदाद** में गिरमिटिया मज़दूरी की व्यवस्था 19 वीं सदी के मध्य में ब्रिटिश साम्राज्य में दास प्रथा के उन्मूलन (1834-38) के बाद श्रमिकों की कमी की प्रतिक्रियास्वरूप उभरी । बागान मालिकों, खासकर चीनी उद्योग में, को अनुशासित और सस्ते कार्यबल की आवश्यकता थी। इस कमी को पूरा करने के लिए, औपनिवेशिक सरकार ने निश्चित अवधि के अनुबंधों के तहत, मुख्यतः भारत से, **गिरमिटिया मज़दूरों को यहाँ लाया** । इस व्यवस्था ने दोनों क्षेत्रों के आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिदृश्य को गहराई से प्रभावित किया।

उत्पत्ति और भर्ती

गिरमिटिया मज़दूरों को ज़्यादातर उत्तर भारत—बिहार, उत्तर प्रदेश और बंगाल के कुछ हिस्सों—से एक ऐसी भर्ती प्रक्रिया के ज़रिए लाया जाता था जिसमें अक्सर धोखाधड़ी शामिल होती थी। एजेंट या " अर्काटी " ऊँची मज़दूरी और बेहतर जीवन स्तर का वादा करते थे। गरीबी, सूखा, जातिगत भेदभाव और अवसरों की कमी ने भी कई भारतीयों को पलायन करने के लिए मजबूर किया। वे **पाँच साल तक काम करने के लिए** अनुबंध (गिरमिट) पर हस्ताक्षर करते थे , जिसमें नवीनीकरण का विकल्प होता था या दस साल बाद भारत लौटने का विकल्प होता था, कभी-कभी मुफ़्त यात्रा का वादा भी होता था।

कार्य और रहने की स्थितियाँ

गुयाना और त्रिनिदाद पहुँचने पर, मज़दूरों को चीनी बागानों में काम पर लगाया गया। परिस्थितियाँ बहुत कठोर थीं:

- **लंबे समय तक काम करना** , अक्सर सुबह से शाम तक
- **सख्त निगरानी** और दंड
- बैरक-शैली के आवासों में **खराब आवास**
- **अपर्याप्त वेतन** जो मुश्किल से बुनियादी ज़रूरतों को पूरा कर पाता था

उपस्थिति के नियम कठोर थे, और अनुबंध तोड़ने पर मज़दूरों को जेल हो सकती थी। बागान मालिक गिरमिटिया मज़दूरों के साथ गुलाम अफ्रीकियों जैसा ही व्यवहार करते थे , हालाँकि कानूनी तौर पर व्यवस्था अलग थी।

सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव

FOR MORE PDF-9485943709

All Full PDF- https://mothernotes.in/ - Previous year solved paper , Guess Paper.

IGNOU "MOTHER PUBLICATION" All PDF BUY ON WHATSAPP MSG- 9485943709
Page 4 of 38 Pages in this Full pdf
THIS IS COPYRIGHT PDF DO NOT SELL OR SHARE TO ANYONE- OTHERWISE LEGAL ACTION TAKEN

कठिनाइयों के बावजूद, गिरमिटिया मज़दूरों ने मज़बूत समुदायों का निर्माण किया। उन्होंने भारतीय भाषाओं, **होली** , **दिवाली जैसे त्योहारों** और धार्मिक प्रथाओं (हिंदू और इस्लाम) को संरक्षित रखा। समय के साथ, इंडो-गुयाना और इंडो-त्रिनिदादियन समुदाय महत्वपूर्ण जनसांख्यिकीय समूहों के रूप में उभरे, जिन्होंने कृषि, व्यापार, शिक्षा और राजनीति में योगदान दिया।

संस्कृतियों के मिश्रण ने स्थानीय व्यंजनों, संगीत और परंपराओं को भी प्रभावित किया। हालाँकि, भारतीय मूल की आबादी और अफ्रीकी मूल की आबादी के बीच सामाजिक विभाजन बना रहा, जो औपनिवेशिक नीतियों के कारण बना, जिन्होंने जानबूझकर जातीय अलगाव बनाए रखा।

सिस्टम का अंत

भारतीय राष्ट्रवादियों, मानवतावादी समूहों और वैश्विक श्रम सुधारकों की बढ़ती आलोचना के कारण इस पर और अधिक जाँच-पड़ताल की गई। दुर्व्यवहार, ज़बरदस्ती भर्ती और शोषणकारी परिस्थितियों की रिपोर्टों ने ब्रिटिश सरकार पर इस व्यवस्था को समाप्त करने का दबाव डाला। **1917** में आधिकारिक तौर पर बंधुआ मज़दूरी व्यवस्था समाप्त हो गई । कई मज़दूरों ने भारत लौटने के बजाय यहीं रहना पसंद किया और गुयाना और त्रिनिदाद में स्थायी रूप से बस गए।

निष्कर्ष

गुयाना और त्रिनिदाद में गिरमिटिया मज़दूरी व्यवस्था बंधुआ मज़दूरी का एक रूप थी जिसने औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था में दास प्रथा का स्थान ले लिया। इसने बागानी कृषि के विकास में योगदान तो दिया, लेकिन साथ ही भारी पीड़ा और शोषण का कारण भी बना। साथ ही, इसने जीवंत इंडो-कैरिबियन समाजों की नींव रखी जो आज भी दोनों देशों की सांस्कृतिक और राजनीतिक पहचान को आकार दे रहे हैं।

ALL SOLVED ASSIGNMENT, GUESS PAPER, PROJECT -
HAND WRITTEN SCAN PDF, HARDCOPY BY POST
ORDER- ON WHATSAPP MSG- 8529719732, 99922-90905
OR VISIT- motherpublication.in / mothernotes.in

प्रश्न - लैटिन अमेरिकी देशों में विदेशी निवेश की भूमिका को संक्षेप में समझाइए।

उत्तर- लैटिन अमेरिकी देशों के आर्थिक और विकासात्मक परिदृश्य को आकार देने में विदेशी निवेश ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पिछले कुछ दशकों में, लैटिन अमेरिका ने अपने विशाल प्राकृतिक संसाधनों, बढ़ते उपभोक्ता बाज़ारों और रणनीतिक भौगोलिक स्थिति के कारण प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) को तेज़ी से आकर्षित किया है। विदेशी निवेश की उपस्थिति ने इस क्षेत्र में आर्थिक विकास, रोज़गार सृजन, औद्योगिक विकास और तकनीकी उन्नति में योगदान दिया है।

1. आर्थिक वृद्धि और विकास

विदेशी निवेश ने लैटिन अमेरिका में आर्थिक विस्तार को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ावा दिया है। ब्राज़ील, मेक्सिको, चिली और कोलंबिया जैसे देशों में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) का पर्याप्त प्रवाह देखा गया है, जिससे सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) की वृद्धि दर मज़बूत हुई है। ये निवेश पूंजी निर्माण को बढ़ावा देने, उत्पादन क्षमता बढ़ाने और उन अर्थव्यवस्थाओं में विविधीकरण को बढ़ावा देने में मदद करते हैं जो पारंपरिक रूप से कृषि और कच्चे माल के निर्यात पर बहुत अधिक निर्भर थीं।

2. रोजगार सृजन और कौशल विकास

प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) रोज़गार सृजन और कार्यबल कौशल में सुधार लाने में सहायक रहा है। विदेशी कंपनियाँ नई कार्य संस्कृतियाँ, तकनीकी विशेषज्ञता और प्रबंधन पद्धतियाँ लेकर आती हैं। यह अनुभव मेजबान देशों में मानव पूंजी को बढ़ाता है। मेक्सिको और कोस्टा रिका जैसे देशों में, विनिर्माण क्षेत्र में एफडीआई—विशेषकर ऑटोमोटिव और इलेक्ट्रॉनिक्स उद्योगों में—ने हज़ारों प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोज़गार सृजित किए हैं, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं को बढ़ावा मिला है।

3. तकनीकी हस्तांतरण और नवाचार

FOR MORE PDF-9485943709

All Full PDF- https://mothernotes.in/ - Previous year solved paper , Guess Paper.

IGNOU "MOTHER PUBLICATION" All PDF BUY ON WHATSAPP MSG- 9485943709
Page 5 of 38 Pages in this Full pdf
THIS IS COPYRIGHT PDF DO NOT SELL OR SHARE TO ANYONE- OTHERWISE LEGAL ACTION TAKEN

विदेशी निवेश का एक सबसे महत्वपूर्ण योगदान उन्नत तकनीक का हस्तांतरण है। बहुराष्ट्रीय निगम आधुनिक मशीनरी, डिजिटल उपकरण और नवीन प्रक्रियाएँ पेश करते हैं जिन्हें स्थानीय उद्योग अपना सकते हैं। उदाहरण के लिए, ब्राज़ील के विमानन और ऊर्जा क्षेत्रों को वैश्विक कंपनियों के साथ तकनीकी सहयोग से लाभ हुआ है, जिससे उत्पादकता और वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता में सुधार हुआ है।

4. बुनियादी ढांचे का विकास

विदेशी निवेश राजमार्गों, बंदरगाहों, दूरसंचार नेटवर्क और ऊर्जा प्रणालियों जैसी बड़े पैमाने की बुनियादी ढाँचा परियोजनाओं को समर्थन प्रदान करता है। ये विकास न केवल व्यावसायिक वातावरण में सुधार लाते हैं, बल्कि नागरिकों के लिए कनेक्टिविटी और जीवन स्तर को भी बेहतर बनाते हैं। वैश्विक निवेशकों द्वारा वित्तपोषित सार्वजनिक-निजी भागीदारी (पीपीपी) पेरू और चिली में बुनियादी ढाँचे के आधुनिकीकरण में महत्वपूर्ण रही है।

5. निर्यात को बढ़ावा देना और वैश्विक बाजारों में एकीकरण

प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) ने लैटिन अमेरिकी अर्थव्यवस्थाओं को वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं में एकीकृत करने में मदद की है। निर्यात-उन्मुख उद्योग—जैसे मैक्सिकन ऑटोमोबाइल, चिली के खनन उत्पाद और अर्जेंटीना के कृषि उत्पाद—उन्नत उत्पादन तकनीकों और अंतर्राष्ट्रीय बाजारों तक पहुँच के माध्यम से विदेशी निवेश से लाभान्वित होते हैं।

6. चुनौतियाँ और चिंताएँ

इन लाभों के बावजूद, विदेशी निवेश चुनौतियाँ भी लेकर आता है। बहुराष्ट्रीय निगमों पर अत्यधिक निर्भरता स्थानीय उद्योगों को कमज़ोर कर सकती है। इसके अतिरिक्त, मुख्यतः खनन क्षेत्रों पर केंद्रित निवेश पर्यावरणीय क्षरण और असमान विकास का कारण बन सकता है।

निष्कर्ष

लैटिन अमेरिका के आर्थिक विकास, तकनीकी प्रगति और अंतर्राष्ट्रीय एकीकरण में विदेशी निवेश की महत्वपूर्ण भूमिका है। उचित विनियमन और स्थायी नीतियों के साथ, यह क्षेत्र में समावेशी विकास को गति प्रदान करता रह सकता है।

प्रश्न - लैटिन अमेरिका में दास प्रथा की विरासत का संक्षेप में परीक्षण करें।

उत्तर- दास प्रथा ने लैटिन अमेरिका में एक गहरी और स्थायी विरासत छोड़ी है, जिसने इस क्षेत्र के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक परिदृश्य को आकार दिया है। 16 वीं से 19 वीं शताब्दी तक, लाखों अफ्रीकियों को जबरन लैटिन अमेरिका, विशेष रूप से ब्राज़ील, कैरिबियन, कोलंबिया और मध्य अमेरिका के कुछ हिस्सों में लाया गया। हालाँकि 19 वीं शताब्दी के अंत में पूरे क्षेत्र में दास प्रथा को समाप्त कर दिया गया था, फिर भी इसके प्रभाव समकालीन समाजों को प्रभावित करते रहे हैं।

सामाजिक और नस्लीय पदानुक्रम

गुलामी की सबसे स्थायी विरासतों में से एक गहरी जड़ें जमाए हुए नस्लीय पदानुक्रम है। गुलामी ने एक ऐसी व्यवस्था को संस्थागत रूप दिया जिसमें अफ्रीकी मूल के लोगों को सामाजिक व्यवस्था में सबसे निचले पायदान पर रखा गया, जिससे उन्मूलन के लंबे समय बाद भी नस्लीय भेदभाव को बल मिला। रंगभेद और नस्लीय असमानता आज भी कायम है, जो शिक्षा, रोज़गार, राजनीतिक प्रतिनिधित्व और संसाधनों तक पहुँच में असमानताओं में परिलक्षित होती है। अफ्रीकी-लैटिन अमेरिकी समुदायों को हाशिए पर धकेले जाने और सीमित सामाजिक गतिशीलता का सामना करना पड़ रहा है, जो दर्शाता है कि कैसे औपनिवेशिक नस्लीय विचारधाराएँ पीढ़ियों से जीवित रही हैं।

सांस्कृतिक योगदान और पहचान

उत्पीड़न के बावजूद, गुलाम बनाए गए अफ्रीकियों ने लैटिन अमेरिकी संस्कृति को महत्वपूर्ण रूप से आकार दिया। अफ्रीकी परंपराओं ने स्वदेशी और यूरोपीय प्रभावों के साथ मिलकर ब्राज़ील में सांबा और कैपोइरा , कोलंबिया में कुम्बिया , क्यूबा में सोन, और कैंडोम्बले , सैंटेरिया और वोडू जैसे विभिन्न अफ्रो-कैरेबियाई धर्मों जैसे समृद्ध सांस्कृतिक रूपों का निर्माण किया। ये सांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँ पूरे क्षेत्र में राष्ट्रीय पहचान के केंद्र में हैं। इसलिए गुलामी की विरासत न केवल पीड़ा की है, बल्कि लचीलेपन, सांस्कृतिक रचनात्मकता और पूर्वजों की स्मृति के संरक्षण की भी है।

आर्थिक असमानता

लैटिन अमेरिका की औपनिवेशिक अर्थव्यवस्थाओं के निर्माण में दास प्रथा ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, विशेष रूप से चीनी, कॉफी और तंबाकू उत्पादन वाली बागान प्रणालियों के माध्यम से। हालाँकि, इसके आर्थिक लाभों ने यूरोपीय उपनिवेशवादियों और स्थानीय अभिजात वर्ग को समृद्ध बनाया, जबकि अफ्रीकी मूल की आबादी दरिद्र बनी रही। दास प्रथा उन्मूलन के बाद, पूर्व दास व्यक्तियों को बहुत कम या बिल्कुल भी सरकारी

FOR MORE PDF-9485943709

All Full PDF- https://mothernotes.in/ - Previous year solved paper , Guess Paper.

IGNOU MOTHER PUBLICATION - ASSIGNMENTS & GUESS PAPERS & PYQ SOLVED PDF

INDIA'S NUMBER 1 STUDY MATERIAL PROVIDER

यह केवल एक सैंपल पीडीएफ है।

यह केवल Sample PDF है। पूरी Solved Assignment या Guess Paper PDF खरीदने के लिए हमारी वेबसाइट पर जाएँ

या

WhatsApp पर मैसेज करें।

WHATSAPP ONLY: +91 9485943709

WHATSAPP ONLY:: +91 9992290905

1. Solved Assignment Visit -:: https://motherpublication.in/

2. Pyq Solved Guess paper Visit:-: https://mothernotes.in/

Mother Publication • IGNOU Study Resources